साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

जनवरी 2013 वर्ष 18, अंक 1

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला की दस्तक

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 ने दस्तक दे दी है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शीर्ष निकाय, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का द्विवार्षिक आयोजन, नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला इस वर्ष से वार्षिक आयोजन हो गया है। **4 से 10 फरवरी, 2013** की अवधि में आयोजित होने वाले इस पुस्तक मेले के सह-आयोजक हैं 'भारत व्यापार प्रोन्नयन संगठन' (इंडिया ट्रेड प्रमोशन ऑर्गेनाइजेशन–ITPO)। एशिया और अफ्रीका के पुस्तक मेलों में विशालतम, 1972 से प्रारंभ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले की इस कड़ी में लगभग 25 देश एवं 1100 प्रकाशकों के लगभग 1900 स्टॉल लगेंगे। 4 फरवरी को पुस्तक मेला का उद्घाटन माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. एम.एम. पल्लम राजू करेंगे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि होंगे भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष श्री कर्ण सिंह।

पुस्तक मेले के दौरान बड़ी संख्या में पुस्तक एवं साहित्य से जुड़ी गतिविधियों के आयोजन होंगे। मेले के आयोजक नेशनल

पृष्ठ सं. 2, पहले कॉलम पर जारी . . .

"हम रहें या न रहें लेकिन यह झंडा रहना चाहिए और देश रहना चाहिए। और मुझे विश्वास है कि यह झंडा रहेगा, हम और आप रहें न रहें, लेकिन भारत का सिर ऊँचा होगा; भारत दुनिया के देशों में एक बड़ा देश होगा और शायद यह दुनिया को बहुत कुछ दे भी सके। अब हमें शांति के लिए भी उसी हिम्मत और हौसले से काम करना है जिससे हमने हमले का सामना किया था।"

लाल बहादुर शास्त्री

पुण्यतिथि, 11 जनवरी

ताशकंद से अंतिम संदेश, 10 जनवरी, 1966

युग परिवर्तक, युग संस्थापक
युग संचालक, है युगाधीर
युग निर्माता, युग मूर्ति तुम्हें
युग-युग तक, युग का नमस्कार।

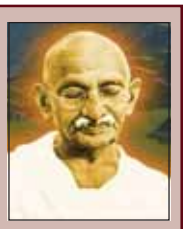

सोहनलाल द्विवेदी

पुण्यतिथि, 30 जनवरी

संदर्भ : विश्व हिंदी दिवस, 10 जनवरी

विश्व भाषा हिंदी की कीर्तिपताका

गाँधी जी ने जिस भाषा को 'भारतीय स्वतंत्रता की वाणी' की संज्ञा दी थी वह भाषा यानी हिंदी आज विश्व के 50 से अधिक देशों में बोली जाकर और विश्व के 136 विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाकर विश्व भाषा बन चुकी है। आँकड़ों में देखें तो मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में चीनी (मंडारिन) भाषा के बाद हिंदी का ही स्थान आता है, अँग्रेजी इस दृष्टि से तीसरे स्थान पर है। लेकिन हिंदी विस्तार क्षेत्र की दृष्टि से चीनी भाषियों की तुलना में कहीं अधिक विस्तृत है। ऐसी विश्व भाषा हिंदी के वैश्विक संदर्भ के आलोक में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। एक मूल, संस्कृत से निकली और 18 बोलियों से निर्मित हिंदी की वैश्विकता का प्रमाण है विश्व हिंदी सम्मेलन, जो सन् 1975 से आयोजित किया जा रहा है। अभी-अभी सितंबर माह में दक्षिण अफ्रीका के शहर जोहान्सबर्ग में 9वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन की 10वीं कड़ी का आयोजन भारत में होना तय हुआ है।

गिरमिटिया प्रथा के अंतर्गत विदेशों में गए जिन भारतवंशियों

पृष्ठ सं. 2, दूसरे कॉलम पर जारी . . .

नए साल की नई सुबह
नए सोच की नई गिरह
निरक्षरता निर्मूल करें हम
नए ज्ञान की नई सुबह।

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा मेला स्थल पर थीम, बाल, युवा सहित अनेक पैवेलियन (मंडपों) का निर्माण किया जाएगा। विदित हो कि इस बार पुस्तक मेले का थीम भारत के लोक एवं जनजातीय साहित्य पर **देशज अभिव्यक्तियाँ : भारतीय परिकल्पना में लोक एवं जनजातीय साहित्य** है। प्रस्तुति का मुख्य आकर्षण हिंदी, अँग्रेजी सहित सभी भारतीय भाषाओं की पुस्तकों की एक विशिष्ट प्रदर्शनी होगी। बाल मंडप में नेशनल बुक ट्रस्ट के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा प्रतिदिन बच्चों के लिए बालोपयोगी साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ होंगी। युवा मंडप में युवाओं के लिए अनेक कार्यक्रम होंगे। इस पुस्तक मेले में फ्रांस को अतिथि देश का सम्मान दिया गया है।

पुस्तक मेला में एक 'लेखक कोना' का निर्माण किया जा रहा है जहाँ पाठक अपने प्रिय लेखक से मिल-बैठकर संवाद कर सकेंगे। मेले की घटनाओं की जानकारी देने के उद्देश्य से हिंदी एवं अँग्रेजी में प्रतिदिन बुलेटिन का प्रकाशन किया जाएगा। प्रकाशक एवं उनके हॉल/स्टॉल/स्टैंड आदि की जानकारी से युक्त फेयर डायरेक्टरी का भी प्रकाशन किया जाएगा।

पुस्तक मेले में नेशनल बुक ट्रस्ट हिंदी एवं अँग्रेजी समेत लगभग 22 भाषाओं में अपनी पुस्तकों के साथ विभिन्न हॉलों में उपस्थित रहेगा।

जन्मदिन स्मरण : 4 जनवरी

लुई ब्रेल : नेत्रअक्षमों का सहारा

जन्म : 4-1-1809
निधन : 6-1-1852

नेत्रअक्षम लोगों के पठन के लिए आज जिस लिपि का प्रयोग किया जाता है उसे फ्रांस के लुई ब्रेल नामक व्यक्ति ने विकसित किया था। जब ब्रेल 3-4 साल के बच्चे थे एक दुर्घटना में उनकी आँखें धीरे-धीरे खराब होती गईं। दस वर्ष के लुई को पेरिस के अंधविद्यालय में दाखिला कराया गया था। यहाँ स्कूल के संस्थापक वेलंटीन हाई द्वारा ईजाद की गई विधि से पुस्तकों में लैटिन अक्षरों को मोटे कागज पर उभारकर पढ़ाई कराई जाती थी। इस विधि से धीरे-धीरे ही पढ़ाई की जा सकती थी। इन पुस्तकों में अधिक सामग्री नहीं लिखी जा सकती थी। बच्चे उन अक्षरों को लिख पाने में भी सक्षम नहीं थे। ब्रेल ने इन कमियों को दूर कर पुस्तक पठन को आसान किया। ब्रेल द्वारा विकसित विधि को ब्रेल लिपि का नाम दिया गया।

ने.बु.ट्र. द्वारा भी ब्रेल लिपि में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है।

ने हिंदी के सृजनात्मक संसार को समृद्ध किया, उनमें दक्षिण अफ्रीका के स्वामी भवानीदयाल संन्यासी अग्रगण्य हैं। उनका जन्म 10 जनवरी, 1892 को दक्षिण अफ्रीका की स्वर्णनगरी, जोहान्सबर्ग में हुआ था। उसी महान हिंदीसेवी स्वामी जी के जन्म दिन को विश्व हिंदी दिवस के लिए चुना गया, जो ऐसे अनन्य हिंदी भक्त के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

आइए, विश्व में हिंदी की दशा-दिशा का एक जायजा लें। शुरुआत पड़ोस से। नेपाल में हिंदी व्यापक पैमाने पर जनसंपर्क की भाषा है। यहाँ के त्रिभुवन विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर तक हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है। श्रीलंका में आठ लाख लोगों की भाषा हिंदी है। सिंगापुर में हिंदी का आकर्षण दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। ट्रिनीडाड एवं टोबैगो में 400 मंदिर हैं, जिनमें अधिकांश में हिंदी पढ़ाई जाती है। फीजी की सरकार ने अपने देश के सरकारी स्कूलों के सभी बच्चों को हिंदी पढ़ाना शुरू कर दिया है। यहाँ माता-पिता अपने बच्चों को इसलिए हिंदी पढ़ाते हैं ताकि उनकी संस्कृति सुरक्षित रहे। अमेरिका के अनेक स्कूलों के पाठ्यक्रम में हिंदी को शामिल किया गया है। यहाँ से *हिंदी जगत* नामक पत्रिका प्रकाशित होती है। हिंद महासागर में 'लघु भारत' के रूप में ज्ञात मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय का निर्माण किया गया है। दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी अपने युवावस्था में रहकर वहाँ हिंदी का व्यापक प्रचार-प्रसार कर चुके थे। बिहार की पृष्ठभूमि के स्वामी भवानीदयाल संन्यासी ने वहाँ हिंदी प्रचारिणी सभा गठित की थी। सूरीनाम में 21 मार्च, 1984 को सूरीनाम हिंदी परिषद नामक संस्था द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं को स्वीकृति मिलने के उपलक्ष्य में इस दिवस को वहाँ हिंदी दिवस मनाया जाता है। सूरीनाम से आए प्रवासियों ने यूरोपीय देश नीदरलैंड में भी हिंदी की जड़ें जमा दीं। बर्मा (म्यांमार) में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक संस्थाएँ हैं जहाँ हिंदी के अलावा संस्कृत एवं पालि अध्ययन की भी व्यवस्था है। ब्रिटेनवासियों की हिंदी के प्रति आरंभ से ही रुचि रही है। यहाँ छठा विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन भी हो चुका है। आर्मेनिया में ज्यादातर छात्र-छात्राएँ हिंदी भाषा ही सीखना चाहते हैं। रूस में भारतीय फिल्मों के दीवाने राज कपूर के जमाने से ही रहते आए हैं। जापान, चीन, कोरिया में भी हिंदी पढ़ाई जाती है। इन देशों में अनेक हिंदीविद् हैं जो हिंदी के प्रचार-प्रसार में रत हैं। विश्व के चुनिंदा देशों में हिंदी की स्थिति की इस बानगी के बाद इस तथ्य को बताना उचित लगता है कि विश्व के निम्नलिखित देशों के रेडियो स्टेशन से हिंदी के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। ये देश हैं : जर्मनी, जापान, चीन, ईरान, ब्रिटेन, अमेरिका, मॉरीशस, श्रीलंका आदि।

संयुक्त राष्ट्र में उपयोग की भाषा के रूप में हिंदी के प्रवेश को लेकर भारत सरकार अभियान चला रही है। आशा की जाती है कि शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र में सातवीं भाषा के रूप में हिंदी का प्रवेश होकर रहेगा।

जन्मदिन स्मरण : 12 जनवरी

स्वामी विवेकानंद : सच्चे भारतीय

"अगर भारत को जानना है तो विवेकानंद को पढ़िए।"

रवींद्रनाथ टैगोर

12 जनवरी, 2013 को स्वामी विवेकानंद की 150वीं जयंती मनाई जा रही है। दुनिया भर में भारतीय अध्यात्म का परचम लहराने वाले और भारत की गौरवशाली परंपरा एवं संस्कृति के सच्चे संवाहक स्वामी जी का जन्म 1863 में कोलकाता के निकट बेलूर मठ में हुआ था। मात्र 39 वसंत देखने वाले 'युवा संन्यासी' और 'युवा हृदय सम्राट' नरेंद्र यानी स्वामी विवेकानंद ने युवाओं का आह्वान किया था—गीता पढ़ने की बजाए फुटबॉल खेलो। कर्मयोगी और युगद्रष्टा स्वामी विवेकानंद का उद्घोष था—उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य को न प्राप्त कर लो। अपने समय से बहुत आगे की सोचने वाले महान चिंतक और दार्शनिक स्वामी जी वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपने जीवन में बहुत महत्व देते थे। स्वयं ही विज्ञान का अध्ययन करने वाले स्वामी जी पश्चिमी विद्वानों से कहते थे—हमें आपसे धर्म की नहीं विज्ञान और टेक्नोलॉजी की शिक्षा की आवश्यकता है। वे शिक्षा और ज्ञान को समाज के उत्थान की कुंजी मानते थे।

उन्होंने अपने अनथक और अविराम यात्राक्रम में अपने मेजबान राजाओं, नरेशों और दीवानों से अपनी रियासत में विद्यालय खोलने और विज्ञान की शिक्षा शुरू करने का आह्वान किया। स्त्री शिक्षा के वे विशेष हिमायती थे। एक विदेशी महिला मार्गरेट नोबल यानी भगिनी निवेदिता उनकी शिष्या थीं। वह स्वामी जी की प्रेरणा से लड़कियों की शिक्षा के लिए लंदन से भारत आई थीं। स्वामी जी ने जात-पात और छुआछूत का विरोध किया। वे भारतीय समाज को हर प्रकार की सामाजिक बुराइयों से दूर करने की बात कहते थे।

विदेशों में भारतीय धर्म, संस्कृति, परंपरा और अध्यात्म का ध्वज फहराने वाले स्वामी जी ने 1893 में जब प्रसिद्ध शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लिया तो उनके महज एक वाक्यांश से मानो समूचा अमेरिका उनका मुरीद बन गया। उन्होंने 'अमेरिका के मेरे भाइयो और बहनो' से अपने संबोधन की शुरुआत ही की कि सारा सभागार तालियों से गूँज उठा। फिर तो भारतीय धर्म, अध्यात्म और दर्शन पर उनके संबोधन से सारा अमेरिका सन्न रह गया। भगिनी निवेदिता ने इस प्रसंग में लिखा है—यह कहा जा सकता है कि उन्होंने जब बोलना शुरू किया तो हिंदुओं के धार्मिक विचार आने शुरू हुए। लेकिन जब उन्होंने खत्म किया तब वहाँ हिंदू धर्म का निर्माण हो गया।

संस्कृत, बांग्ला, हिंदी के अलावे अँग्रेजी और फ्रेंच बोलने में भी सिद्धहस्त बहुभाषाविद् स्वामी जी ने कई विशिष्ट ग्रंथों की भी रचना की थी। रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी जी गौतम बुद्ध को अपना आदर्श मानते थे। परंपरा और आधुनिकता दोनों को साधकर चलने वाले स्वामी जी के बारे में पं. नेहरू ने लिखा है—वे एक तरह से प्राचीन और वर्तमान भारत के बीच की कड़ी थे। भारत में उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी। मजदूर, किसान और मेहनतकश लोगों के लिए उन्होंने 'दरिद्रनारायण' शब्द गढ़ा और कहा कि ये लोग ही समाज की रीढ़ हैं इसलिए ये ईश्वर का रूप हैं। श्रम की महिमा को वे गहराई से समझते थे। ऐसे विराट और दिव्य विश्व मानव का संपूर्ण जीवन वर्तमान पीढ़ी का ही नहीं, आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा-स्रोत बना रहेगा। उनका देहावसान 4 जुलाई, 1902 को हुआ।

पुण्यतिथि, 20 जनवरी पर स्मरण

खान अब्दुल गफ्फार खाँ : अनवरत योद्धा

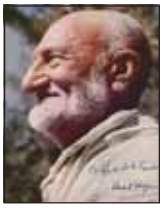

स्वाधीनता से पहले वे अँग्रेजों से लड़े और स्वाधीनता के बाद पाकिस्तान के नागरिक के रूप में वहाँ के शासकों की कुनीतियों से लड़े। खान अब्दुल गफ्फार खाँ पख्तूनों (पठान; पाकिस्तान और अफगानिस्तान का मुसलमान जातीय समूह) के अग्रणी नेता थे, जो 1919 में गाँधी जी से पहली ही मुलाकात में उनके अनुयायी बन गए। लाल कुर्ती नामक एक अहिंसक राष्ट्रीय आंदोलन के प्रणेता खान साहब गाँधी की ही तरह देश के विभाजन के घोर विरोधी थे। उन्होंने 1921 के खिलाफत आंदोलन, 1930 के विदेशी वस्तु बहिष्कार आंदोलन और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन समेत अनेक आंदोलनों में भाग लिया। परिणामतः अँग्रेज सरकार ने उन्हें बार-बार गिरफ्तार किया। वे कुल मिलाकर लगभग 14 वर्ष तक जेल में बंद रहे। भारतीय जनता उन्हें सम्मान और प्यार से सीमांत गाँधी या सरहदी गाँधी भी कहती है। उनका जन्म 1890 में उत्तमजाई गाँव, जिला चारसदा, पाकिस्तान में हुआ था।

1929 में काँग्रेस पार्टी की एक सभा में शामिल होने के बाद गफ्फार खाँ ने खुदाई खिदमतगार (ईश्वर का सेवक) की स्थापना की थी। 1930 के दशक में वे गाँधी जी के निकटस्थ सलाहकार रहे। भारत विभाजन तक वे सक्रिय रूप से काँग्रेस पार्टी के साथ रहे। देश-विभाजन के पश्चात वे बेशक पाकिस्तान चले गए, लेकिन पख्तून अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिए वे वहाँ भी लड़ते रहे। फलतः सरकार ने उन्हें देश निकाला दे दिया। 1972 तक वह अफगानिस्तान में रहे। उन्होंने अपनी आत्मकथा भी लिखी—माई लाइफ ऐंड स्ट्रगल। यह 1969 में प्रकाशित हुआ था। 1988 में 20 जनवरी को उनका देहावसान हो गया।

नववर्ष, छब्बीस जनवरी एवं गाँधी जी पर काव्यमयी प्रस्तुति

आ गई छब्बीस जनवरी

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

साल बिताकर फिर
आ गई छब्बीस जनवरी
देश में अपनी धूम
मचा गई छब्बीस जनवरी।

गणतंत्र दिवस है आज
बता गई छब्बीस जनवरी
शहीदों की याद
दिला गई छब्बीस जनवरी।

देश का राष्ट्रीय झंडा
फहरा गई छब्बीस जनवरी
आजादी की झाँकी
दिखला गई छब्बीस जनवरी।

गाँव-गाँव और शहर-शहर
छा गई छब्बीस जनवरी
भारत का इतिहास
दोहरा गई छब्बीस जनवरी।

गोरखपुर, उ.प्र.

नववर्ष का तराना

कृष्ण कुमार यादव

नववर्ष की बेला आई
खुशियों की सौगातें लाई
कर गुजरने का है मौका
सद्भावों की नौका लाई।

नया वर्ष है, नया तराना
झूमें-नाचें गाएँ गाना
और नया संकल्प हमारा
कभी किसी को नहीं सताना।

बदला साल, कैलेंडर बदला
बदला है इस तरह जमाना
भेजें सबको नेह निमंत्रण
नए वर्ष का गाएँ तराना।

इलाहाबाद, उ.प्र.

संकल्प

पं. गिरिमोहन गुरु

नवयुग का इतिहास बनेंगे
गाँधी भगत सुभाष बनेंगे
अंधों के पथदर्शक होंगे
बूढ़ों का विश्वास बनेंगे
रामचरित शाकुंतल लिखकर
तुलसी कालीदास बनेंगे
जिसमें होगा नहीं अंधेरा
ऐसा हम आकाश बनेंगे।

होशंगाबाद, म.प्र.

नववर्ष, छब्बीस जनवरी एवं गाँधी जी पर काव्यमयी प्रस्तुति

नए वर्ष में

कृष्णा अवस्थी

नए वर्ष में मेरी माँ
मत करना तुम टालमटोल
भेजोगी न मुझको शाला?
कुछ तो मुख से अपने बोल।

कमला पढ़ गई, बिमला पढ़ गई
'टीचर' बन गई माया
पशु के जैसे अनपढ़ होते
बोल रही थी छाया।

अक्षर ज्ञान बिना तो लगता
जीवन में अंधियारा
शिक्षा की ज्योति से ही
घर-घर फैलेगा उजियारा।

सुन लो माँ अब मेरी बात
ला दो पोथी कलम दवात
जाऊँगी मैं शाला
मेहनत करूँगी दिन और रात।

फिर ऊँचे पद पर जाऊँगी
खूब नाम कमाऊँगी
माँ तेरी शान बढ़ाऊँगी
काम देश के आऊँगी।

पालमपुर, कांगड़ा, हि.प्र.

हमारे गाँधी जी

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

सत्य अहिंसा के थे पुजारी
हमारे गाँधी जी
खादी धोती टोपी पहनते
हमारे गाँधी जी।

सदा सत्य की बात कहते
हमारे गाँधी जी
अँग्रेजों से नहीं डरते
हमारे गाँधी जी।

झूठ की राह पर नहीं चलते
हमारे गाँधी जी
सबको लेकर साथ चलते
हमारे गाँधी जी।

भारत को आजाद कर गए
हमारे गाँधी जी
दुश्मन की गोली से
शहीद हो गए
हमारे गाँधी जी।

गोरखपुर, उ.प्र.

उजास

डॉ. अंजना अनिल

हाथ में
पुस्तक लो
एक अनूठा
अनुभव लो।
ज्ञान दर्पण है ये
इसमें झाँको
जीवन में
उजास भर लो।

अलवर, राजस्थान

बढ़ते चलो

ओमप्रकाश बजाज

कुछ न कुछ नया करते चलो
कदम-कदम आगे बढ़ते चलो

रुकने का भला क्या काम
जीवन आगे बढ़ने का है नाम

उन्नति को अपना लक्ष्य बनाओ
फिर उसी दिशा में बढ़ते जाओ

जो ठिठक गया वह थम गया
निश्चय ही वह पिछड़ गया

कितना कुछ करना है तुम्हें
बहुत आगे बढ़ना है तुम्हें

कठिनाइयों अड़चनों से न डरो
उत्साह उमंग ले साथ चलो।

जबलपुर, म.प्र.

तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा। —नेताजी सुभाष चंद्र बोस
संदर्भ : जन्मदिवस 23 जनवरी

नया साल सबके जीवन में
ढेरों खुशियाँ लाए
सबके चेहरे से
गम सारे मिट जाए!
बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, *गोरखपुर, उ.प्र.*

फूल खिलेंगे हर पल हरदम
खुशबू वाला होगा मौसम
संस्कार और ज्ञान जहाँ पर
वहाँ कभी भी होगा न गम।
प्रो. शरद नारायण खरे, *मंडला, म.प्र.*

किताबें, रोशनी के पाँव जैसे
किताबें, ऋषियों की छाँव जैसे
प्रभु भी पाँव धोकर चढ़े, तरे
किताबें, केवट की नाव जैसे।
आनंद बिल्थरे, *बालाघाट, म.प्र.*

नववर्ष पर संकल्प कराएँ
साक्षरता का इक दीप जलाएँ
जग में न कोई अनपढ़ रहे
ज्ञान की ऐसी गंगा बहाएँ।
सुरेंद्र 'अंशुल' *अंबाला, हरियाणा*

संदेहों को दूर भगाती
पुस्तक गिनती पाठ पढ़ाती
जोड़, घटाना, गुणा-भाग कर
हमें कुशल और दक्ष बनाती।
गोपीनाथ कालभोर, *खंडवा, म.प्र.*

किताबें सबसे खामोश, सबकी पक्की दोस्त होती हैं। सर्वसुलभ सलाहकार और शांत, धैर्यवान शिक्षक।
—चार्ल्स विलियम इलियट

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **सा. सं., दिसंबर 2012 :** काका कालेलकर का हिंदी के अनन्य उपासक के रूप में स्मरण उचित ही था। काका पर आपने काफी ठोस और उम्दा जानकारी दी। मैथिलीशरण गुप्त, मदन मोहन मालवीय और भिखारी ठाकुर पर भी बेहद उपयोगी जानकारी दी गई हैं। दिसंबर माह से संबंधित इन महान विभूतियों के बारे में पढ़ने के अलावा ट्रस्ट के नए प्रकाशनों को भी पढ़ा। यह एक बढ़िया उपक्रम है। इससे ट्रस्ट की नई पुस्तकों का परिचय मिलता है। क्षणिकाएँ/लघुकाएँ हर बार की तरह इस बार भी उम्दा लगीं।
संदीप 'सृजन', उज्जैन, म.प्र.

☐ पत्रिका में शिक्षा-साक्षरतापरक छोटी-छोटी रचनाओं का आप बेहतर प्रयोग करते हैं। 'नवसाक्षरों के लिए' पृष्ठ पर प्रस्तुत काव्य रचनाएँ नवसाक्षरों के लिए बेहद प्रेरक एवं प्रोत्साहक होती हैं। आवरण लेख एवं पृष्ठ 2-3 की रचनाएँ अकसर सामयिक संदर्भ लिये हुए होती हैं, जो बेहद उपयोगी लगती हैं। नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला की जानकारी देते विज्ञापन के साथ पुस्तक से संबंधित नारा अच्छा लगा। महान शख्सियतों के विचार को समय-समय पर प्रकाशित कर आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। दरअसल, एक लघु विचार ही कभी-कभी लोगों के जीवन की दिशा बदल देते हैं। **कैलाश चंद्र भाटिया,** अलीगढ़, उ.प्र.

☐ न केवल नवसाक्षरों और साक्षरताकर्मियों के लिए बल्कि साक्षरों के लिए भी अति उपयोगी है। इसके साथ ही छात्रों एवं स्कूलों के लिए भी यह बेहद लाभकारी है। संक्षेप में, पत्रिका ज्ञान का आगार है। मैं **सा.सं.** के अंकों को वर्षों से संजोकर रख रहा हूँ।
डॉ. भालचंद्र तिवारी, लखनऊ, उ.प्र.

☐ नेशनल बुक ट्रस्ट का **साक्षरता संवाद** सींच रहा साहित्य से भारत की बुनियाद। पुस्तक के प्रति अभिरुचि जगे, जगे राष्ट्र के प्रति प्यार। गतिविधियों संग रचनाएँ हर बार। नवसाक्षर, साक्षर तथा आम पाठक हेतु बना यह ज्ञान का आगार।
पं. गिरिमोहन गुरु, होशंगाबाद, म.प्र.

☐ **सा. सं.** कलेवर में छोटी है पर यह अपने में बहुत-सी जानकारियाँ संजोए होती है। प्रयास प्रशंसनीय और सराहनीय है। सामग्री संग्रह करने योग्य हैं। संपादक मंडल को हमारी ओर से साधुवाद।
कृष्णा अवस्थी, पालमपुर, कांगड़ा, हि.प्र.

☐ **सा. सं.** का प्रत्येक अंक पठनीय और संग्रहणीय होता है। नवसाक्षरों और साक्षरताकर्मियों के लिए यह तो उपयोगी है ही, हम प्रौढ़ों को भी रचनात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। बच्चे भी इस पत्रिका से लाभ उठाते हैं। **अनिरुद्ध प्रसाद विमल,** बाँका, बिहार

नई सोच हो, नई खोज हो
शिक्षा पाने का जोश हो।

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें—प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** —*संपा.*

साक्षरता के गीत

राम प्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

कोई भी तो
मुझे पढ़ा दे
निरक्षर को
साक्षर बना दे।

पढ़ना-लिखना
मुझे न आता
शिक्षा से तो
जुड़ा न नाता।

गिनती-भाषा
मुझे न आती
अनपढ़ता अब
मुझको खाती।

मैं न जानूँ
जोड़-घटाव
आए न पढ़ना
मुझे किताब।

लिखवाऊँ मैं
किससे पाती?
रह-रहकर बात
मन में आती।

साक्षरता के
गीत अब गाऊँ
बस्ता लेकर
पढ़ने जाऊँ।

सिहाल, कांगड़ा, हि.प्र.

शब्द-वृक्ष

डॉ. शमी शर्मा

यह शब्द-वृक्ष है उन अक्षरों के
जो ज्ञान के फल हैं देते
ये फूल बने हैं साक्षरता के
जो संवाद साक्षरता से मिलते।
अनपढ़ों को हैं पथ दिखलाते
लेखन जो हैं नहीं जानते
हस्ताक्षर भी जो नहीं कर पाते
भाषा लेखन से जो हैं वंचित।
साक्षरता संवाद उन्हें
पथ शब्दों का दिखलाके
अनपढ़ता को दूर भगाकर
ज्ञान-ज्योति का दीप जलाके।
पढ़-लिखकर अनपढ़ बोले
इस पत्रिका ने परदे खोले
अब तो हम सब कुछ लिख लेते
कहानी कविता सब पढ़ लेते।

कांगड़ा, हि.प्र.

अक्षरों के प्रकाश से
अज्ञानता का तिमिर
हम हटाएँगे
देश को खुशहाल और
साक्षर हम बनाएँगे।

विशाल शुक्ल ॐ, छिंदवाड़ा, म.प्र.

साक्षरता के दोहे

कमलेश व्यास 'कमल', *उज्जैन, म.प्र.*

अक्षर-अक्षर सीखकर, साक्षर बने समाज
साक्षरता वरदान है, सुधरे कल औ' आज।
साक्षरता के मंत्र से, जो रखता है प्रीत
जीवन के हर क्षेत्र में, उसकी होती जीत।
अनपढ़ रह गए हम यदि, चाहे हों धनवान
बड़ा वही कहलाएगा, जो दे विद्या दान।
साक्षरता अभियान की, जलती रहे मशाल
निरक्षरता के तम की, न गलने दें दाल।
पढ़ना-लिखना सीखना, जीवन का आधार
सबके लिए समान हैं, शिक्षा का अधिकार।
पढ़-लिखकर साक्षर बनो, सबको दो यह ज्ञान
गाँव-गाँव औ' शहर का, दूर करो अज्ञान
अनपढ़ता की धूप में, मिली ज्ञान की छाँव
साक्षरता अभियान से, आया यह बदलाव।

आओ

प्रो. शामलाल कौशल

आओ लोगों को
साक्षर बनाएँ
अंधकार अज्ञान को
दूर भगाएँ
सोए हुओं को
हम जगाएँ
ज्ञान की उनमें
जोत जगाएँ
उन्हें मंजिल
तक पहुँचाएँ
उनको आत्मनिर्भर
हम बनाएँ।

रोहतक, हरियाणा

शिक्षा की कोई उम्र नहीं होती। सच्चा शिक्षार्थी वह है जो जीवन भर सीखता रहे।

किशन लाल शर्मा, आगरा, उ.प्र.

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/1/2013

साक्षरता संवाद के पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ!

अच्छे इनसान बनेंगे

ठाकुरदास कुल्हारा

पढ़ाई पर ही अपना सतत ध्यान देंगे
पढ़-लिखकर अच्छे इनसान बनेंगे।
शिक्षा का उद्देश्य है, ज्ञान प्राप्त करना
पाकर प्रगति-पथ बढ़ते रहेंगे।
श्रम से कभी अपना मुँह नहीं मोड़ेंगे
रोटी हमेशा हम, ईमाँ की खाएँगे।
अपने लिए ही न, जीएँगे जिंदगी
दीन-हीन, दुखियों की सेवा करेंगे।
घर-परिवार की हम, अपने समाज की
राष्ट्र की, तरक्की में, सहभागी बनेंगे।
प्रभु ने दिया हमको, अनमोल जीवन
जिसमें सतत, सुख शांति भरेंगे।

जबलपुर, म.प्र.

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070